ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, *RNI:UPBIL04292,REG.No.:561/2013-14 Vol.-I, No.-1*, **PP-63-67**, *YEAR 2014*

भूमण्डलीकरण का सामाजिक प्रभाव

❑ **डॉ0 जान्हवी प्रसाद***
डॉ ऋषिकेश नारायण सिंह**

वैश्वीकारण के जन्मदाता अमेरिका की कृपा से अब हम मनुष्य नहीं उपभोक्ता बन गये हैं। हम कम कीमत पर उत्कृष्ट गुणवत्ता वाली वस्तुओं को प्राप्त कर सकते हैं। चाहे इसकी वजह से फुटपाथ पर घूम–घूमकर बेचने वाले भी किसानों की भॉति आए दिन आत्महत्या क्यों न करने लग जायें। चाहे आदिवासियों को अपना जंगल ही क्यों न छोड़ना पड़ जाए, चाहे विश्व बाजार में प्राकृतिक सार्वजनिक वस्तुओं की नीलामी ही क्यों न हो जाए, चाहे हमारी (उपभोक्ता कि) बला से वैश्वीकारण मनुष्य नहीं उपभोक्ता पैदा कर रहा है जो बाजार द्वारा निर्मित मूल्यों के अनुसार जीवन यापन करें, चाहे उसे इसकी कीमत चुकाने के लिए अपनी बलि देनी पड़े। वैश्वीकरण अचानक व एक धक्के से निकलकर नहीं आया। सोवियत संघ के पतन के बाद एक ध्रुवीय अमेरिकी वर्चस्व होने से बहुराष्ट्रीय पूंजीवाद का अबाध रास्ता खुलता है। भूमण्डलीकरण पश्चिमी अवधारणा है, जो मुक्त बाजार व्यापार नीति के रूप में 1846 में इग्लैण्ड में शुरू हुती है। वह बीसवी सदी के अन्तिम दशक में विश्व व्यापार संगठन के रूप में दुनिया के शान्तिप्रिय एवं विकासशील देशों की प्राकृतिक सम्पदा, राजनैतिक और आर्थिक अस्तित्व के लिए न केल खतरा है अपितु संप्रभु देशों के नागरिकों को उपभोक्ता बनाकर पश्चिमी दुनिया की भोगवादी संस्कृति को थोपने की कुचेष्टा एवं षडचन्त्र है। राजेन्द्र यादव लिखते हैं – ''भूमण्डलीकरण और बाजारवाद आन्दोलन नहीं विदेशी आक्रमण है ओर वे हमारी सहमति से अपने सम्पन्न भविष्य के सपनों के चोर दरवाजों के सहारे मनोजगत में घुसपैठ कर रहा है .... आधार पूंजी की गिरफ्त में होने से हमारी मानवीय चिन्ताओं या समाज कल्याण जैसा कोई फितूर हमें परेशान नहीं करता।'' (हंस, मार्च – 2008)

आज दुनिया का कोई भी देश उदार अर्थव्यवस्था की परिधि से बाहर रहने और अपनी अलग सत्ता बनाये रखने के लिए तैयार होता दिखाई नहीं दे रहा है। धीरे–धीरे ताश के पत्ता का एक ऐसा महल बन गया है जिसके एक पत्ते में होने वाला जरा सा कम्पन्न भी महल की सारी संरचना को डगमगा देता है। हाल ही में आई अमेरिका के बाजार की महामंदी ने सारी दुनिया के देशों को हिलाकर रख दिया है। यह व्यवस्था उन चन्द लोगों के हित में काम करती है जो इण्टरनेट एवं टीवी चैनलों के माध्यम से भूमण्डलीय बाजार में अपनी सेवाएं बेचने के लिए समर्थ होते हैं। परिणामतः सामाजिक एकता एवं परस्पर लगाव की भावना का ह्रास होता है। दुनिया में आज जैसी–जितनी असमानताएं दिखाई दे रही हैं उतनी–वैसी इतिहास के किसी भी काल में कभी नहीं रही हैं।

भूमण्डलीकरण, संस्कृति व भाषा: भूमण्डलीकरण ने वैश्विक स्तर पर एक संस्कृति और एक भाषा की मुहिम चला रखी है। चूँकि हम विश्व ग्राम में रहते हैं अतः हमारी भाषा भी एक ही होनी चाहिए, वह भी अंग्रेजी। भूमण्डलीकरण की संस्कृति उपभोक्तावादी संस्कृति है। उपभोक्तावाद का अर्थ है – उपभोग का केन्द्र में होना अर्थात् किसी अर्थव्यवस्था में उत्पादन और वितरण के बरक्स उपभोग को असीमित प्राथमिकता देना। इससे यह स्पष्ट होता है कि उपभोग केवल आवश्यक आवश्यकताओं (रोटी, कपड़ा, मकान, दवा, शिक्षा) को पूरा करने तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि वह आरामदायक और विलासिता की वस्तुओं को भी

* विभागाध्यक्ष एवं प्रवक्ता समाजशास्त्र विभाग राजा हरपाल सिंह पी0जी0 कालेज सिगरामऊ, जौनपुर, उ0 प्र0
** प्रवक्ता–समाजशास्त्र कमला देवी बाजोरिया महाविद्यालय, दुबहड, बलिया, उ0 प्र0

प्राथमिकता में ले लेता है। लालच भी जरूरत की तरह लगता है – ज्यादा चीजें, कई तरह की चीजें, रिश्तेदार पड़ोस से बेहतर चीजें, जन माध्यमों द्वारा विज्ञापनों में दिखाई गई नयीं चीजें, प्रदर्शनी या मेला–बाजार में देखी गयी चीजें। मतलब फालतू (विलासी) चीजों को एकत्रित करने की होड़ अर्थात् अपनी गाढ़ी कमाई बाजार के हवाले करना। इस प्रकार हम उपभोग करने के लिए कई चीजों के प्रति इतने दीवाने हो जाते हैं कि अपने घर में एक छोटा–मोटा बाजार तैर कर लेते हैं – दैनिक उपभोग के नहीं, भावी उपभोग के लिए। इतना ही नहीं संस्कृति और सभ्यता की भद तो तब पिट जाती है जब टीवी पर आ रहे कार्यक्रमों के बीच में ऐसे आपत्तिजनक विज्ञापन आ जाते हैं जिन्हें पविार के सदस्यों के साथ तो क्या अगेले भी देखने में शर्म आती है। इन विज्ञापनों का ही असर है कि भोजपुरी संगीत में 'निरहुआ संस्कृति' विकसित हो चुकी है। परिवार नियोजन के लिए आजकल घर की दिवारों पर लिखें एक विज्ञान देखें – "एक हो या अनेक, कण्डोम लगा के देश", जिसे, बच्चे, युवक–युवतियाँ तथा बूढे सभी पढ़ते हैं। ऐसे विज्ञापनों से समाज में उच्छृंखलता व्याप्त हो रही है। इससे भारतीय संस्कृति पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है। जहाँ एक पत्नी के साथ फेरे लेते समय सात जन्मों तक साथ निभाने की बात की जाती थी, वहीं आज तलाक की संख्या में वृद्धि हुई है, यह भूमण्डलीकरण का ही प्रभाव है।

भूमण्डलीकरण और सामाजिक संरचनाः आज के युग संचार और प्रौद्योगिकी का युग है। भौतिकवाद का युग है, बढ़ती मँहगाई, असीमित साधनों को प्राप्त करने की ललक ने आज हमारी एवं पारिवारिक संरचना को भी प्रभावित किया है। हमारे वर्तमान परिवारों को आज अनेक समस्याओं से रूबरू होना पड़ रहा है। बढ़ती मँहगाई के कारण माँ–बाप दोनों को कामकाजी होना मजबूरी हो जा रही है जिससे पारिवारिक समस्याएँ उत्पन्न हो रही है–

बालक के लालन–पान की समस्या। पति–पत्नि दोनों के कामकाजी होने के कारण सर्वप्रथम समस्या आती है बच्चों के लालन–पालन की। आज के समय में कैरियर को अधिक महत्व देने के कारण स्त्रियाँ बच्चों की जिम्मेदारी अपने ऊपर नहीं लेनी चाहती हैं, अतः बच्चों के पालन पोषण की जिम्मेदारी आया और स्कूलों पर आ जाती है। ऐसे में बच्चे हताशा ओर अकेलेपन से जूझते हैं। वे टीवी, कम्प्यूटर वीडियोगेम जैसे माध्यमों के साथ अपना अधिक समय बिताते हैं। इसीलिए इन बच्चों में हिंसक प्रवृत्ति और सामंजस्य न करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। भूमण्डलीकरण के कारण ही आज तलाकों की संख्या में वृद्धि हो रही है। विवाहेत्तर सम्बन्धों व होमो सेक्सूअल सम्बन्धों में बढ़ोत्तरी हो रही है। होमोसेक्सुअल सम्बन्धों को कानूनी मान्यता मिलने के बाद समाज में परिवार–संस्था के सामने एक नया संकट पैदा हो गया है। इसने तो स्त्री–पुरुष सम्बन्धों पर परिवार प्रणाली के अस्तित्व के लिए ही संकट पैदा कर दिया है।

'लिव इन रिलेशनशील' के कारण भी उन बच्चों के भविष्य पर खतरा मंडरा रहा है जो इस सम्बन्ध के फलस्वरूप पैदा हो रहे हैं। इसमें स्त्री–पुरूष जब तक चाहे साथ रहें ओर जब चाहे अलग हो जाये और बच्चों की जिम्मेदारी उठाने से दोनों अपने हाथ पीछे खीच रहे हैं। अन्तरजातीय और प्रेम विवाहों में वृद्धि होने से हमारे जातीय बन्धन, अस्पृश्यता और दहेज जैसी समस्याओं में थोड़ी कमी जरूर आई है।

भूमण्डलीकरण में स्त्रीः भूमण्डलीकरण ने औरत को 'पावर वूमेन' बना दिया है। यह सब करने के लिए उसे किसी नारीवादी गोलबन्दी या सिद्धान्तशस्त्र की जरूरत नहीं पड़ी।केवल बाजार, पूँजी और संचार क्रांति की तकत के दर पर औरत की दुनिया बदल गयी है। भूमण्डलीकरण ने दावा किया है कि अब पहले से कहीं ज्यादा औरतें अपने लैंकिग हित को ध्यान में रखकर वोट डालती हैं औश्र राजनीति में सीधी भागीदारी करती हैं। अब पहले से कहीं ज्यादा औरतों के पास अपनी निजी आमदनी का स्त्रोत है और वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं। सौन्दर्य–उद्योग और

पॉप संस्कृति के जरिये उन्हेंने अपनी यौनिकता का दो तरफा इस्तेमाल किया है अर्थात श्याति और धन कमाने के साथ–साथ उन्होंने अपनी यौनिकता का दो तरफ इस्तेमाल किया है अर्थात् ख्याति औश्र धन कमाने के साथ–साथ उन्होंने अपनी यौनिकता का दोतरफा इस्तेमाल किया है अर्थात ध्याति औश्र धन कमाने के साथ–साथ उन्होंने पुरूष को चमत्कत कर दिया हैं अब पहले से कहीं ज्यादा औरतें आझ्र्थिक और प्रशासनिक सत्ता में निर्णयकारी हैसियत प्राप्त करती जा रही हैं। पुरूषों के हाथों का खिलौना बनने के बजाय उनके हाथ में पुरूषों को अपनी मर्जी से चलाने की ताकत आ गयी है।

इस प्रकार बाजार के प्रवक्ताओं ने घोषित ही कर दिया है कि अब औरत को आजाद होने में देर नहीं हैं। जो थोड़ी बहुत बाधाएँ शेष हैं, वे अगले कुछ दिनों में दूर कर ली जायेंगी। लेकिन महिला सशक्तिकरण के इस भूमण्डलीकृत अभिमान का एक दूसरा पहलू भी है जो कहीं अधिक विश्वसनीय और सटीक ढंग से साबित करता है कि भूमण्डलीकरण ने औरतों को अतीत की किसी भी कालावधि के मुकाबले अधिक निर्ममता और सम्पूर्णता से एक बिकाऊ जिंस में बदल दिया है। यहाँ औरत का बिकाऊ माल में बदलना केवल सौन्दर्य उद्योग के सन्दर्भ में या आमतौर पर बाजार की आलोचना के एक मुहावरे के तौर पर नहीं बताया जा रहा है। दासप्रथा के दिनों से भी ज्यादा और सामंतवादी युग की व्यापकता को भी पीछे छोड़ते हुए भूमण्डलीकरण के पिछले बीस वर्षों यानी नब्बे के दशक से अब तक वैश्विक स्तर पर औरतों के निर्यात के जरिये अरबों, खरबों डालर की रकम उगाही गई हैं यह व्यापार औरतें के मानवीय, राजनीतिक ओर नागरिक अधिकारों का हनन करके सम्पन्न होता है। यह तिजारत मुख्यतः वेश्यावृत्ति, श्रम बाजार और अवैध आव्रजन के लिए की जाती है। यौन उद्योग के लिए औरतों की तिजारत इस व्यापार के कर्ता धर्ताओं के लिए भारी मुनाफे का स्त्रोत है। संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि 1998 में चालीस लाख औरतों क निर्यात हुआ, जिसमें अपराधी गिरोहों ने सात अरब डालर कमाया। अनबी धरती पर अपना श्रम और देह बेच कर इन औरतों ने बड़े पैमान पर विदेशी मुद्रा अपने देश में भेजी, जिससे अर्थतन्त्रों ने अपना विदेशीकर्जा चुकाया और भूमण्डलीकरण की होड़ जारी रखी। इस प्रकार हम देखते हैं कि इस दौर में औरतें केवल अपने या अपने परिवार के लिए गुलामी नहीं कर रहीं हैं वरन् पूरे अर्थतन्त्र के लिए गुलामी कर रही हैं।

भूमण्डलीकरण, शिक्षा, कृषि और स्वास्थ्य:

भूमण्डलीकरण ने शिक्षा, कृषि और स्वास्थ्य आदि जो प्राथमिक क्षेत्र हैं, उन्हें भी प्रभावित किया। जिन क्षेत्रों पर पहले सरकारी नियन्त्रण रहता था, अब भूमण्लीकरण के इस दौर में उनका निजीकरण हो रहा है और सरकारें अपनी जवाबदेही से बच जा रही हैं। सबसे पहले हम शिखा को ले – आज शिक्षा का निजीविद्यालय कुकुरमुत्ते की तरह उग रहे हैं जिनमें अध्यापन कराने के लिए शिक्षित बेरोजगार बहुत कम वेतन पर मिल पर मिल जा रहे हैं जो आखें क्लास (पीरियड्स) में बकबक करने के लिए बाध्य है। वहीं सरकारी विद्यालयों में अच्छा–खासा वेतन पाने वाले शिक्षक अपने उत्तरदायित्व से मुँह मोड़ रहे हैं, उनसे पूछने वाला या उन पर दबाव डालने वाला कोई नहीं है।

वर्तमान मानव संसाधन मंत्री महोदय संसद में विधेयक पास कराने में लगे हैं जिसके तहत विदेशी विश्वविद्यालय बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के माध्यम से अपना कैम्पस भारत में खोल सकेंगे और उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। अर्थात उच्च शिक्षा को भी बाजार के हवाले करने की मंशा। विदेशी विश्वविद्यालय को यहाँ लाने के पीछे उनका कुछ तर्क है –

1. यहाँ से बाहर जाकर पढ़ने वाले छात्रों की संख्या कम हो जायेगी ओर इस तरह यहां का पैसा यहीं रह जायेगा।
2. रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।
3. बाहर के कुछ देशों में भारतीय छात्रों के साथ होने वाले अपमानजनक व्यवहार के अवसर

लगभग समाप्त हो जायेंगे।

4. यहाँ के विश्वविद्यालयों में भी इनके समकक्ष आने या इनसे आगे निकलने की ललक पैदा होगी।

अब प्रश्न उठता है कि उन विदेशी विश्वविद्यालयों के कैम्पसों में किन व्यक्तियों के बच्चे अध्ययन करेंगे? ये विदेशी वि0वि0 किसके लिए खुल रहे हैं? आम नागरिकों के बच्चों के लिए या उन चन्द लोगों के बच्चों के लिए जो विदेश जाकर भी पढ़ने में समक्ष हैं। क्या आम भारतीय जन मानस के पास इतनी पूंजी हैं कि वे इन विश्वविद्यालयों का शुल्क अदा कर सकें? जहाँ सरकारी विश्वविद्यालयों और उनसे सम्बद्ध महाविद्यालयों में स्नातक तथा स्नातकोत्तर की डिग्री क्रमशः 7500 रूपये (तीनों वर्षों को मिलाकर) तथा 6000 रूपये में मिल जाती है, वहीं डिग्री इन विदेशी विश्वविद्यालयों में 2 से 2.5 लाख रूपये में मिलेगी, इन दोनों का अनुपात मिला लिया जाय।

शिक्षा की तरह सरकार कृषि और स्वास्थ्य क्षेत्रों का भी निजीकरण कर रही है। कृषि में जीएम फसलों की वकालत कर रही है। जिनका बीज किसी एक ही बहुराष्ट्रीय कम्पनी का पेटेंट होगा। इससे जाहिर है कि वह कम्पनी मनमाना दाम वसूलेगी। पहले से खुदखुशी कर रहे किसान आत्महत्या के लिए अब और ज्यादा मजबूर होंगे।

यही हाल चिकित्सा का है। चिकित्सा क्षेत्र पहले जहाँ सेवा का क्षेत्र माना जाता था, अब धन उगाही का व्यापक क्षेत्र बन गया है। इसका प्रमाण यह है कि सरकारी चिकित्सक अपने पदों से इस्तीफा देकर अपना निजी अस्पताल खोल रहे हैं। जिसका नियम है पहले फीस जमा, तब फिर इलाज। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भी निजी स्वास्थ्य क्षेत्र में अपना कदम रख चुकी हैं इन अस्पतालों में मरीज के जान से कीमती पैसा है। इसका उदाहरण बैशाखी के दिन 13 अप्रैल, 2010 को को कोलकाता महानगर के दो बड़े निजी अस्पतालों 'पीयरलैस' और 'एपेक्स' में हुई वारदात से जाहिर हुआ।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि जिन–जिन सार्वजनिक क्षेत्रों में सरकार अपना पैसा लगा रही थी और जिसमें उसे मुनाफा कर होता था और उसकी जवाबदेही थी, उन–उन क्षेत्रों से वह अपना हाथ पीछे खीच रही है तथा उन्हें किन्हीं क्षेत्रों एवं बाजार के हवाले करते जा रही है। यही कारण है कि शिक्षा, स्वास्थ्य और जनवितरण प्रणाली, खेती, आजीविका और रोजगार के निजीकरण से चौतरफा सत्यानाश का आलम कायम हुआ है।

भारत में भूमण्डलीकरण का प्रभाव : भारत में नीजिकरण तथा आर्थिक उदारीकरण के मार्फत भूमण्डलीकरण अर्थात् वैश्वीकरण के दो दशक बीतने के बाद उसके प्रभावों एवं परिणामों पर विचार करना जरूरी है। सूत्रबद्ध रूप में इन पर चर्चा करें तो हम निम्नलिखित निष्कर्षों। पर पहुँच सकते हैं –

1. बीमा, टेलीकॉम के निजीकरण के जरिये विदेशी पूंजी का प्रवेश।
2. बैंकिंग रेग्यूलेशन संशोधन अधिनियम के जरिये निजी बैंकों में विदेशी पूंजी की उर्ध्वसीमा में 74 प्रतिशत तक की वृद्धि।
3. शिक्षा, स्वास्थ्य, जल–आपूर्ति जैसे कल्याणकारी क्षेत्रों में विदेशी संस्थाओं का प्रवेश।
4. लाभजनक उद्योगों को कर में भारी छूट तथा आम जन पर कर का भारी दबाव जनवितरण प्रणाली का ठप्प पड़ना।
6. हजारों किसानों द्वारा सामुहिक आत्महत्या (1993 से 2009 के बीच 2,05,628 किसानों द्वारा आत्महत्या)।
7. ट्रेड–यूनियन से मुक्त उत्पादन व्यवस्था का नारा, श्रमिक अधिकारों पर हमला।
8. पेंशन व्यवस्था का निजीकरण।
9. विशेष आर्थिक क्षेत्र, आई0टी0पार्क, डाउन

साइजिंग नौकरी के अवसरों का लोप।

10. खाद्यान्न गोदामों में भरें, फिर भी भूखे लोगों की संख्या में वृद्धि।

11. दस पंचवर्षीय योजनाओं के बाद भी मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार भारत का 134वॉ ग्रन्थ स्थान।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. अप्पादोराय, एः ''डाक्यूमेंट्स ऑन पोलिटिकल थॉट इन माडर्न इण्डिया'', बम्बई, 1973.
2. परांजपे, आर0 पी0:''गोपाल कृष्ण गोखले'', पूना, 1915.
3. बुच, एम0 ए0 : ''दी स्पिरिट ऑफ एनशियण्ट हिन्दू कल्चर'', बड़ौदा, 1921.
4. रामगोपाल : ''जीवन परिचय–लोकमान्य तिलक'', बम्बई, 1965.
5. वापट, एस0 वी0 (सं0): ''रेमिनिसेन्सेज एण्ड एनेकडोट्स ऑफ लोकमान्य तिलक'', खण्ड 2.
6. प्रोब्लम्स ऑफ नेशलन एजूकेशन इन इण्डिया.